



एच.पी.पी.एस.सी.
उपस्थिति ऐप

अभियार्थियों की उपस्थिति दर्ज करने
और सत्यापित करने की प्रक्रिया

स्पांट-लाइट

एच.पी.पी.एस.सी. उपस्थिति ऐप

हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग (HPPSC) द्वारा आयोजित भर्ती परीक्षाओं के संवेदनशील वातावरण में सटीकता, पारदर्शिता और निष्पक्षता सर्वोपरि एवं अपरिहार्य हैं। पारंपरिक रूप से, परीक्षा केंद्रों पर उपस्थिति अंकन मैनुअल प्रक्रियाओं पर आधारित था, जिससे विलंब और त्रुटियों की संभावना बनी रहती थी। HPPSC Attendance मोबाइल ऐप के साथ इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया में एक क्रांतिकारी डिजिटल परिवर्तन आया है। यह ऐप परीक्षा केंद्रों पर आवेदकों के ए.आई. फेस ऑथेंटिकेशन आधारित रीयल-टाइम सत्यापन की सुविधा प्रदान करती है।

HPPSC की भर्ती परीक्षाओं के लिए विकसित यह ऐप, अभियार्थियों की उपस्थिति दर्ज करने और सत्यापित करने की प्रक्रिया को आधुनिक एवं त्रुटि रहित बनाती है। अधिकृत परीक्षा कर्मी, मोबाइल उपकरणों के माध्यम से वास्तविक समय में उपस्थिति दर्ज कर सकते हैं, जिससे प्रक्रिया त्वरित और अधिक विश्वसनीय बनती है। प्राक्क्षी उपस्थिति या स्थान-आधारित विसंगतियों की संभावनाओं को समाप्त करने के लिए इस ऐप में अंतर्निहित GPS सुविधा यह सुनिश्चित करती है कि उपस्थिति केवल निर्धारित परीक्षा केंद्रों पर ही दर्ज की जा सके।

प्रक्रिया की विश्वसनीयता को और सुदृढ़ करने के लिए, ऐप में चेहरे की पहचान और जियो-टैगिंग जैसी उन्नत तकनीकों को शामिल किया गया है। ये विशेषताएँ अतिरिक्त सत्यापन प्रदान करती हैं, जिससे प्रतिरूपण (इम्पर्सनेशन) के जोखिम में उल्लेखनीय कमी आती है।

पारदर्शिता इस पहल का मूल आधार है। ऐप उपस्थिति से संबंधित सुरक्षित डिजिटल रिकॉर्ड (ऑडिट ट्रेल) बनाए रखती है, जिन्हें समीक्षा या शिकायत निवारण के लिए उपयोग किया जा सकता है जिससे भर्ती प्रक्रिया की विश्वसनीयता सुदृढ़ होती है।

कागज़ी कार्यवाही एवं मानवीय त्रुटियों को कम करके तथा प्रशासनिक समय की बचत करके, HPPSC अटेंडेंस मोबाइल ऐप परीक्षा प्रणाली एवं प्रबंधन को अधिक सुव्यवस्थित बनाती है। डिजिटल इंडिया के दृष्टिकोण के अनुरूप, यह कुशल, पारदर्शी और तकनीक-संचालित भर्ती प्रणाली की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इसके अतिरिक्त, HPPSC Applicant ऐप भी अभ्यर्थियों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग की जा रही है। भर्ती प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए विकसित की गई यह ऐप एक सिंगल-विंडो डिजिटल प्लेटफॉर्म है। इसके माध्यम से अभियार्थी एक बार पंजीकरण (वन-टाइम रजिस्ट्रेशन) प्रोफाइल बनाकर भर्ती विज्ञापनों के लिए आवेदन कर सकते हैं, आवेदन की स्थिति ट्रैक कर सकते हैं, एडमिट कार्ड/साक्षात्कार पत्र/नियुक्ति पत्र डाउनलोड कर सकते हैं, पूर्व आवेदन देख सकते हैं तथा हेल्प डेस्क के माध्यम से अपनी शिकायतें दर्ज कर सकते हैं। अभियार्थियों के दस्तावेजों के सुरक्षित और पेपर रहित सत्यापन के लिए इस प्रणाली को डिजीलॉकर के साथ भी एकीकृत किया गया है। डिजीलॉकर से सीधे प्रमाणित डिजिटल दस्तावेजों द्वारा प्राधिकृत अधिकारी, अभियार्थियों की पहचान का सत्यापन कर सकते हैं जिससे भौतिक दस्तावेजों पर निर्भरता कम होती है और जालसाजी की संभावना न्यूनतम हो जाती है।

अतिथि अनुभव

श्रीमती निवेदिता नेगी, भा.प्र.से.

सचिव, हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग



हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग (HPPSC) द्वारा आयोजित भर्ती परीक्षाओं के संवेदनशील वातावरण में सटीकता, पारदर्शिता और निष्पक्षता सर्वोपरि एवं अपरिहार्य हैं। पारंपरिक रूप से, परीक्षा केंद्रों पर उपस्थिति अंकन मैनुअल प्रक्रियाओं पर आधारित था, जिससे विलंब और त्रुटियों की संभावना बनी रहती थी। HPPSC Attendance मोबाइल ऐप के साथ इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया में एक क्रांतिकारी डिजिटल परिवर्तन आया है। यह ऐप परीक्षा केंद्रों पर आवेदकों के ए.आई. फेस ऑथेंटिकेशन आधारित रीयल-टाइम सत्यापन की सुविधा प्रदान करती है।

डिजीलॉकर सुविधा के एकीकरण से दस्तावेजों के सत्यापन में आसानी के साथ-साथ भौतिक अभिलेखों पर निर्भरता कम हुई है, जिससे दक्षता और कागज रहित शासन को बढ़ावा मिला है, जो आज के समय की आवश्यकता है।

एच.पी.पी.एस.सी. आवेदक ऐप ने अभियार्थियों को मोबाइल फोन के माध्यम से आवेदन जमा करने में सक्षम बनाया है, जिससे विशेष रूप से राज्य के दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले अभियार्थियों को मदद मिली है, तथा भर्ती प्रक्रिया में सुगमता, सुविधा और समावेशिता आई है। इसके अतिरिक्त, चेहरे की पहचान के लिए एच.पी.पी.एस.सी. उपस्थिति ऐप की शुरुआत ने सिस्टम को एक अतिरिक्त सुरक्षा उपाय प्रदान किया है, और यह प्रतिरूपण की जांच करने और परीक्षाओं के संचालन में अधिक पारदर्शिता लाने में सहायक होगा।

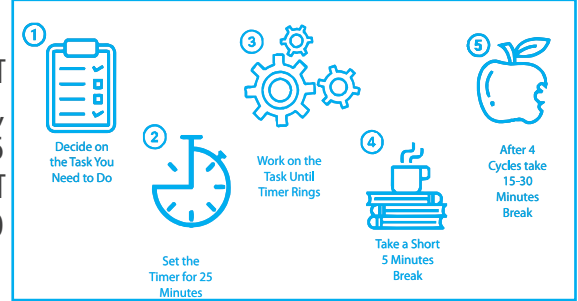
मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है, कि एच.पी.पी.एस.सी. की इन डिजिटल पहलों को व्यापक सराहना मिली है, और कई लोक सेवा आयोग नियमित रूप से आयोग का दौरा कर रहे हैं, ताकि एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश के समर्थन और सहयोग से विकसित की गई प्रणाली की नई अभिनव डिजिटल पहलों को सीख सकें।

मैं, आयोग की ओर से एक बार पुनः एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा दिए गए समर्पित सहयोग और समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ और भविष्य की डिजिटल पहलों और सुधारों में निरंतर सहयोग की आशा करती हूँ।

टेक टिप्स

समय प्रबंधन एवं उच्च उत्पादकता के लिए पोमोडोरो तकनीक

पोमोडोरो तकनीक (Pomodoro Technique) 1980 के दशक के अंत में फ्रांसेस्को सिरिलो द्वारा विकसित एक लोकप्रिय समय प्रबंधन पद्धति है, जो उत्पादकता बढ़ाने के लिए काम को छोटे, केंद्रित सत्रों (आमतौर पर 25 मिनट) में विभाजित करती है, जिन्हें 'पोमोडोरो' कहा जाता है। प्रत्येक सत्र के बाद 5 मिनट का छोटा ब्रेक लिया जाता है और चार सत्रों के बाद 15-30 मिनट का लंबा ब्रेक अनिवार्य है।



पोमोडोरो तकनीक समय प्रबंधन का एक तरीका है जिससे कार्यों को छोटे-छोटे और निर्बाध भागों में बाँटकर उन्हें अधिक सुलभ बनाया जा सकता है। कम समय में रिवीजन के कार्यों को पूरा करके और अपने दिमाग को आराम देकर, आप बहुत अधिक जानकारी के बोझ तले दबे बिना अपनी सूची के कार्यों को पूरा कर सकते हैं। इससे श्रेष्ठ योजना बनाने और उत्पादकता बढ़ाने में सहायता मिलती है।

मुख्य लाभ और विशेषताएं:

उन्नत एकाग्रता: लगातार काम करने से ध्यान भटकता है, लेकिन 25 मिनट का केंद्रित समय, फोकस बढ़ाता है।

थकान में कमी: बीच-बीच में ब्रेक लेने से मानसिक थकान कम होती है।

उत्पादकता में वृद्धि: यह तकनीक उत्पादकता बढ़ाने के लिए समय के बेहतर प्रबंधन में मदद करती है।

सरलता: इसके लिए केवल एक टाइमर (आरम्भ में टमाटर के आकार के किचन टाइमर का प्रयोग), पेन और कागज की आवश्यकता होती है।

यह तकनीक उन लोगों के लिए बहुत ही प्रभावकारी है जो कार्य करने के समय ध्यान केंद्रित करने में संघर्ष करते हैं या काम में देरी (procrastination) की आदत से परेशान रहते हैं।

नवीनतम गतिविधियां

श्री मुकेश अग्निहोत्री, माननीय उपमुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश द्वारा 20 जनवरी 2026 को जल शक्ति विभाग के लिए हिम-अतिथि पोर्टल का शुभारंभ किया गया। इस ऑनलाइन प्रणाली के माध्यम से सरकारी कर्मचारी और आम नागरिक विभाग के विश्राम गृहों की बुकिंग कर सकते हैं।



एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा 10 फरवरी 2026 को "स्मार्ट टेक्नोलॉजी, सुरक्षित विकल्प - ए.आई. के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग की खोज" विषय पर आधारित सुरक्षित इंटरनेट दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कर्मचारियों, छात्रों और जन प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा 01 से 15 फरवरी 2026 के बीच स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस पखवाड़े के दौरान एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने स्वच्छता की शपथ ली और वृक्षारोपण एवं विभिन्न स्वच्छता गतिविधियों में भाग लिया।

हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के माननीय अध्यक्ष, कैप्टन रामेश्वर सिंह ठाकुर, भा.पु.से. (सेवानिवृत्त) द्वारा 22 फरवरी 2026 को 'एच.पी.पी.एस.सी. कैन्डिडेट' और 'एच.पी.पी.एस.सी. अटेन्डेन्स' ऐप लॉन्च किए गए।

02 मार्च 2026 को होम गार्ड स्वयंसेवकों की भर्ती के लिए एच.जी.वी.आर. पोर्टल (<https://hgvr.hp.gov.in/>) आरम्भ किया गया। इस पोर्टल के माध्यम से इच्छुक आवेदक एक बार पंजीकरण विकल्प का उपयोग करके अपना पंजीकरण कर सकते हैं और हिमाचल प्रदेश होम गार्ड स्वयंसेवकों की भर्ती के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

श्री सुखविंदर सिंह, माननीय मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश द्वारा 22 मार्च 2026 को एच.जी.वी.एम.एस. (<https://hgvms.hp.gov.in/> - होम गार्ड स्वयंसेवक प्रबंधन प्रणाली) पोर्टल का शुभारंभ किया गया। यह पोर्टल होम गार्ड स्वयंसेवकों के नामांकन एवं प्रबंधन से लेकर विभिन्न अनुरोधकर्ताओं द्वारा उनके आवेदन तथा भुगतान प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने के लिए विकसित किया गया है।



टेक अपडेट

वेबसॉकेट्स: वास्तविक-समय आधारित संचार प्रौद्योगिकी

परिचय

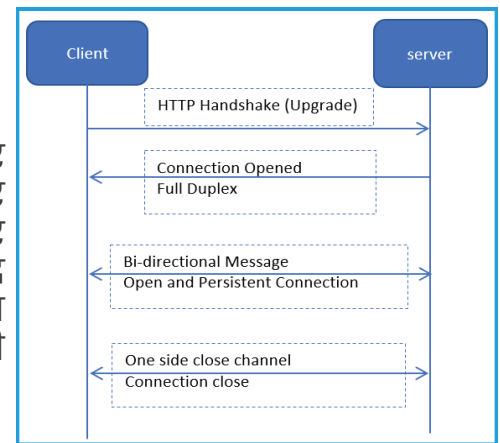
वेबसॉकेट एक आधुनिक संचार प्रोटोकॉल है जो एक ही स्थायी कनेक्शन पर क्लाइंट और सर्वर के बीच वास्तविक समय में पूर्ण डुप्लेक्स/Full Duplex संचार को सक्षम बनाता है। पारंपरिक HTTP संचार के विपरीत, जो अनुरोध और प्रतिक्रिया मॉडल का पालन करता है, वेबसॉकेट कनेक्शन स्थापित होने के बाद उसे बनाए रखता है। क्लाइंट और सर्वर दोनों एक दूसरे को किसी भी समय संदेश भेज सकते हैं और प्रत्येक अनुरोध के लिए नया कनेक्शन बनाने की आवश्यकता नहीं होती है।

उपयुक्त तकनीक का चयन

एस.एस.ई., लॉन्ग पूलिंग आदि कई अन्य वास्तविक-समय आधारित संचार प्रौद्योगिकियों में, वेबसॉकेट सबसे अधिक लोकप्रिय है क्योंकि यह फुल-डुप्लेक्स संचार को सक्षम बनाता है, जिससे क्लाइंट और सर्वर दोनों एक स्थायी कनेक्शन पर किसी भी समय संदेश भेज सकते हैं। यह विशेषता इस प्रौद्योगिकी को अत्यधिक इंटरैक्टिव अनुप्रयोगों के लिए आदर्श बनाती है।

वेबसॉकेट संचार प्रक्रिया

वेबसॉकेट क्लाइंट और सर्वर के बीच एक स्थायी कनेक्शन बनाकर HTTP संचार के प्रतिबंधों को दूर करता है। एक बार कनेक्शन स्थापित हो जाने पर, दोनों पक्ष बार-बार नए कनेक्शन बनाए बिना संदेश भेज और प्राप्त कर सकते हैं। इससे फुल-डुप्लेक्स संचार संभव हो पाता है और डेटा एक साथ दोनों दिशाओं में प्रवाहित हो सकता है। परिणामस्वरूप, तीव्र संचार, न्यूनतम विलंबता और वास्तविक समय में डेटा आदान-प्रदान की आवश्यकता वाले अनुप्रयोग अधिक कुशलता से कार्य करते हैं।



वेबसाँकेट हैंडशेक प्रक्रिया

वेबसाँकेट संचार की शुरुआत हैंडशेकिंग प्रक्रिया से होती है। क्लाइंट वेबसाँकेट प्रोटोकॉल पद्धति में अपग्रेड करने के लिए सर्वर को एक HTTP अनुरोध भेजता है। यदि सर्वर वेबसाँकेट का समर्थन करता है, तो वह 101 स्विचिंग प्रोटोकॉल स्टेटस कोड के साथ प्रतिक्रिया देता है। कनेक्शन HTTP से वेबसाँकेट में बदल जाता है और निरंतर संचार के लिए खुला रहता है। यह स्थायी चैनल अतिरिक्त HTTP अनुरोधों के बिना तुरंत संदेश भेजने की अनुमति देता है।

गंतव्य

चायल - हिमाचल प्रदेश का एक शांत पहाड़ी क्षेत्र

चायल, हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में स्थित एक छोटा लेकिन रमणीक हिल स्टेशन है। समुद्र तल से लगभग 2,250 मीटर की ऊंचाई पर स्थित चायल, चीड़ तथा देवदार के घने जंगलों से घिरा हुआ है और अपने शांत वातावरण, प्राकृतिक सुंदरता एवं शाही इतिहास के लिए जाना जाता है। शिमला से लगभग 45 किलोमीटर दूर स्थित यह हिल स्टेशन उन पर्यटकों के लिए भी एक लोकप्रिय गंतव्य है जो भीड़भाड़ वाले स्थानों से दूर शांति और सुकून की तलाश में रहते हैं।



ऐतिहासिक महत्व

ब्रिटिश काल में चायल को तब प्रसिद्धि मिली जब महाराजा भूपिंदर सिंह ने इसे पटियाला राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया। ऐतिहासिक वृत्तांतों के अनुसार, ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा महाराजा पटियाला को शिमला में प्रवेश करने से प्रतिबंधित कर दिया गया था, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने 1891 में चायल को अपना निजी विश्रामस्थल बनाने का निर्णय लिया।

जलवायु एवं प्राकृतिक सौन्दर्य

चायल में साल भर मौसम सुहावना रहता है। गर्मियाँ ठंडी और आरामदायक होती हैं, जबकि सर्दियाँ बहुत ठंडी हो सकती हैं और बर्फबारी भी होती है। घने जंगलों से घिरा हुआ यह हिल स्टेशन शिवालिक पर्वत श्रृंखलाओं के मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है, जो इसे प्रकृति प्रेमियों के लिए एक आदर्श गंतव्य बनाते हैं।

पर्यटन स्थल और साहसिक गतिविधियाँ

यहाँ के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में ऐतिहासिक चायल पैलेस, चायल क्रिकेट ग्राउंड, काली-का-टिब्बा में स्थित काली माँ का मंदिर, चायल वन्यजीव अभ्यारण्य तथा पाषाण कुंभ शिव मंदिर शामिल हैं। पर्यटक ट्रेकिंग, प्रकृति की सैर और आस-पास की नदियों में मछली पकड़ने जैसी साहसिक गतिविधियों का भी आनंद ले सकते हैं। शांत वातावरण और मनमोहक प्राकृतिक दृश्य इसे ट्रेकिंग, प्रकृति प्रेमियों और घूमने के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य बनाते हैं।

घूमने का उत्तम समय

चायल की यात्रा वर्ष भर किसी भी समय की जा सकती है। मार्च से अक्टूबर तक यहाँ का मौसम सुहावना रहता है और चारों ओर हरियाली छाई रहती है, जबकि नवंबर से फरवरी तक यह क्षेत्र बर्फ से ढके खूबसूरत दृश्यों के साथ एक बर्फीले स्वर्ग में बदल जाता है।

कैसे पहुंचे



वायु मार्ग द्वारा: लगभग 63 किलोमीटर दूर जुब्बड़ हट्टी (शिमला), चायल से निकटतम हवाई अड्डा है। इसके अतिरिक्त, लगभग 120 किलोमीटर दूर स्थित चंडीगढ़ का एस.बी.एस. अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, एक अन्य प्रमुख हवाई अड्डा है। यहाँ से टैक्सी या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करके सड़क मार्ग द्वारा चायल पहुंचा जा सकता है।



रेल मार्ग द्वारा: चायल से निकटतम ब्रॉड-गेज रेलवे स्टेशन लगभग 85 किलोमीटर दूरी पर कालका में स्थित है, जबकि निकटतम नैरो-गेज रेलवे स्टेशन लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर कंडाघाट में स्थित है। इन सभी स्थानों से चायल के लिए टैक्सी और बसें उपलब्ध हैं।



सड़क मार्ग द्वारा: चायल आसपास के सभी प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। शिमला, सोलन, कालका, चंडीगढ़ और अन्य प्रमुख स्थानों से चायल के लिए बसें और टैक्सीयाँ आसानी से उपलब्ध हैं।

यादों के पल

हिमकोष को एक, विश्वास बनाया है धीरे-धीरे,
नए फीचर्स और इनोवेशन से सजाया है धीरे-धीरे।
फॉक्स प्लस, यूनिक्स से शुरु कर,
MVC, बूटस्ट्रेप का रंग लगाया है धीरे-धीरे।

एक Single Server से मेघराज क्लाउड पर उड़ान भरकर,
हिमकोष को multi-tenant बनाया है धीरे-धीरे।
वर्ल्ड बैंक से जब मिली सराहना,
Treasury क्लाउड को highly available बनाया है धीरे-धीरे।

ई-वितरण में बजट कंट्रोल किया,
सैलरी, पेंशन का नया सिस्टम दिया,
OLTIS से अकाउंटिंग को आसान बनाया,
Central Schemes को SNA-SPARSH से चलाया,
हर चुनौती को मेहनत और समर्पण से हराया है धीरे-धीरे।

डैशबोर्ड, डिजिटल सिग्नेचर, Biometric Auth की धार लगाकर,
PFMS, ई-कुबेर, NPCI, बैंक आदि के साथ हाथ मिलाकर,
हिमकोष को सशक्त और समझदार बनाया है धीरे-धीरे।

किसी को गिराया न खुद को उछाला कभी,
सिर ऊंचा कर काम करना सिखाया धीरे-धीरे।
डांटा भी प्यार से, गाइडेंस दी ध्यान से,
ग्रुप हेड का असली मतलब समझाया धीरे-धीरे।

सेवा-निवृत्ति आ गई सर, पर कोई टेंशन नहीं,
जब कहीं भी अटकेंगे, आपको ही तंग करेंगे धीरे-धीरे।

(साभार - श्री मुकेश कुमार, श्री विजय कुमार गुप्ता जी की सेवा-निवृत्ति के उपलक्ष पर)



कोड से शासन तक: एन.आई.सी. में मेरी 36 वर्षों की यात्रा

मैंने 26 सितंबर 1990 को राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र (NIC) में अपने सात साथियों के साथ, हिमाचल प्रदेश से चयनित प्रथम बैच के रूप में प्रवेश किया—यह जाने बिना कि यह संस्था मेरे जीवन का इतना महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाएगी। पिछले 36 वर्षों में यह यात्रा केवल एक नौकरी नहीं रही, बल्कि सीख, चुनौतियों, विकास और स्थायी संबंधों से भरा एक सार्थक अनुभव रही है।

अपने करियर के शुरुआती दौर में उत्साह के साथ-साथ एक जिम्मेदारी भी थी—स्वयं को सिद्ध करने की, अपनी पहचान बनाने की और सार्थक योगदान देने की। उस समय आई.टी. का वातावरण विकसित हो रहा था, संसाधन सीमित थे और हर कार्य में नवाचार एवं समर्पण की आवश्यकता होती थी।

लंबे कार्य घंटे, दिनचर्या का हिस्सा बन गए। निरंतर नई तकनीकों को सीखा, सीमित संसाधनों में समाधान विकसित किए और चुनौतियों को अवसरों में बदला। जो शुरुआत में एक नौकरी थी, वह धीरे-धीरे एक मिशन में बदल गई—तकनीक के माध्यम से शासन और नागरिकों के बीच एक मजबूत सेतु बनाकर। इन पहलों ने सरकारी सेवाओं में पारदर्शिता, दक्षता और पहुंच को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मैं अपने वरिष्ठ अधिकारियों का उनके विश्वास, मार्गदर्शन और समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। अपने सहयोगियों और टीम सदस्यों का भी धन्यवाद करता हूँ—ये उपलब्धियाँ किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयास और टीम भावना का परिणाम हैं। अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण अध्याय को पूर्ण करने पर मैं गर्व, संतोष और कृतज्ञता का अनुभव करता हूँ। इस संस्था का हिस्सा होना मेरे जीवन के सबसे गौरवपूर्ण अनुभवों में से एक रहा है। आप सभी के उज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य और निरंतर सफलता की हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद (साभार - श्री विजय कुमार गुप्ता)

फॅमिली कनेक्ट

वैज्ञानिक अधिकारी/इंजीनियर-एस.बी. श्री संदीप कुमार, श्री आनंद कुमार तथा श्री देवव्रत आर्य एवं वैज्ञानिक/तकनीकी सहायक-ए सुश्री प्रियंका यादव, श्री वेदांत खाची तथा श्री मनोज कुमार ने एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में अपने पेशेवर करियर की शुरुआत की। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश सभी नव नियुक्त अधिकारियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।



एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में लगभग 36 वर्षों की बहुमूल्य सेवाएं प्रदान करने के उपरांत, श्री विजय कुमार गुप्ता 28 फरवरी 2026 को वैज्ञानिक-एफ/वरिष्ठ निदेशक (आई.टी.) के पद से सरकारी सेवा से अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हुए। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश, श्री विजय गुप्ता को एक सुखी, स्वस्थ और आनंदमय सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएं देता है।



Quote

सही कार्य करने के लिए समय हमेशा, हर वक्त ठीक होता है - मार्टिन लूथर किंग जूनियर

परामर्श: श्री अजय सिंह चैहल

संवाद पत्र टीम

मुख्य संपादक: श्री विनोद कुमार गर्ग

संपादक: श्री आशीष शर्मा

संपादक: श्री पृथ्वी राज

डिज़ाइन एवं रचनात्मक कलाएं: श्री सर्वजीत कुमार

योगदानकर्ता:

श्री संजय शर्मा
श्री देवव्रत आर्य
श्री संदीप कुमार

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र

हिमाचल प्रदेश राज्य केन्द्र, छठी मंजिल, आम्सडिल बिल्डिंग

हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश - 171002

sio-hp@nic.in +91-177-2624045

<https://nichimachal.nic.in>

अस्वीकरण: लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, और लेखों में निहित तथ्यों एवं सूचना की सटीकता की जिम्मेदारी लेखकों की है।